Patrika (Indore), 18th March 2016

IIT-I में सिविल और मैटलर्जिकल इंजीनियरिंग की होगी शुरुआत

GOOD NEWS नए सेशन में दो ब्रांच के साथ 140 सीट का होगा इजाफा

सौरभ पांडे
mp.patrika.com

इंदौर नए आईआईटी के बीच में तेजी से आगे बढ़ रहा आईआईटी इंदौर इस साल एक कदम और आगे बढ़ाते हुए नई शुरुआत करने जा रहा है। आईआईटी इंदौर में इस साल से दो नई ब्रांच सिविल और मटेरियल एंड मैटलर्जिकल (धातु विज्ञान) इंजीनियरिंग की शुरुआत की जा रही है। अभी तक आईआईटी इंदौर में सिर्फ इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल और कम्प्यूटर साइंस के ही डिपार्टमेंट मौजूद थे।

पुरानी ब्रांच में बढ़ेगी सीटों की संख्या

आईआईटी इंदौर में पहले से मौजूद इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल और कम्प्यूर साइंस इंजीनियरिंग ब्रांच में सिर्फ 40-40 सीट्स ही मौजूद थीं। इन्हें बढ़ाकर इस साल से 60-60 किया जा रहा है। वहीं इस साल से शुरू होने वाली ब्रांच सिविल और मटेरियल एंड मैटलर्जिकल इंजीनियरिंग में अभी 40-40 सीट्स ही रखी जाएंगी।

120 से बढ़कर हो जाएंगी 260 सीट

2 नई ब्रांच की शुरुआत और पुराने ब्रांच में सीटों की संख्या में इजाफे के बाद इस साल आईआईटी इंदौर में कुल 260 सीट पर प्रवेश दिया जाएगा। जबकि पिछले साल तक सिर्फ 120 सीट पर ही दिया जाता था। ऐसे में जेईई एडवांस्ड में शामिल होने वाले छात्रों को 140 सीट का फायदा हुआ है।

1238 तक पहुंच गई है ओपनिंग रैंक

आईआईटी इंदौर की फैकल्टी मीडिया कोऑर्डिनेटर निर्मला मेनन ने बताया कि आईआईटी इंदौर क्वालिटी में लगातार सुधार कर रहा है। जहां इंस्टीट्यूट की ओपनिंग रैंक 3000 हुआ करती थी, वहीं अब ऑल इंडिया 1238 रैंक लाने वाले छात्र भी संस्थान में पढ़ाई कर रहे हैं। इंस्टीट्यूट में इस समय 80 फुल टाइम पीएचडी फैकल्टी मौजूद हैं। इसके साथ हम इंडस्ट्री के एक्सपर्ट की मदद लेते हैं। वहीं छात्रों की बात करें तो 480 यूजी कोर्स, 378 पीएचडी और 400 पीजी के छात्र संस्था में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं।

लगातार बना हुआ है आगे

आईआईटी इंदौर की शुरुआत 2008-9 में हुई थी। अब तक इसे आईईटी डीएवीवी से संचालित किया जा रहा था। हाल ही में इसे नव निर्मित कैम्पस में शिफ्ट किया गया है। अब इंस्टीट्यूट की सभी एकेडमिक एक्टिविटी एक ही बिल्डिंग से संचालित की जा रही है। आईआईटी इंदौर का प्रदर्शन शुरुआत से ही काफी अच्छा है। जहां पिछले साल आईआईटी इंदौर के छात्र को 1.7 करोड़ का पैकेज मिला था, वहीं इस साल का एवरेज पैकेज करीब 20 लाख रुपए का रहा। इसके साथ ही आईआईटी इंदौर के साथ में ही शुरू हुए आईआईटी हैदराबाद, गांधीनगर, पटना, भुवनेश्वर, जोधपुर और रोपर से रिसर्च के मामले में लगातार आगे बना हुआ है।